वैश्वीकरण : मीडिया और हिन्दी साहित्य

डॉ. विक्रम सिंह
सह. आचार्य हिन्दी
राजकीय महिला महाविद्यालय, बसताड़ा, घरौंडा

शोध–पत्र सारः

वैश्वीकरण के युग में हिन्दी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं अंग्रेजी और चीनी के साथ ही हिन्दी भी है। ग्लोबलाइजेशन ने सम्पूर्ण संसार को एक परिवार में परिवर्तित कर दिया है। वैश्वीकरण का प्रभाव मीडिया, साहित्य, संस्कृति, कला और भाषा पर व्यापक स्तर पड़ रहा है। हिन्दी भाषा पर भी इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित किया जा सकता है। हिन्दी विश्व के 93 देशों में अपना स्थान बना चुकी है। फीजी में तो हिन्दी भारत के समान ही राजभाषा के रूप में सुशोभित है। हिन्दी के महत्त्व को समझते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, साऊदी अरब अमीरात, कुवैत, मॉरीशस, मलेशिया, इटली, फ्रांस, कनाड़ा, बांग्लादेश, नेपाल, बहरीन आदि ने अपनी शिक्षा नीति के तहत पाठ्यक्रम में शामिल किया है। विश्व के अनेक देशों के साथ भारत के सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध होने के कारण हिन्दी के विकास की संभावना भी बढ़ी है। आज का युग कंम्प्यूटर और मीडिया का युग है जैसे–जैसे इनका विकास होग वैसे ही हिन्दी भी प्रगति पथ पर अग्रसर होगी। आज हम देखते हैं कि भारत में ही नहीं पूरे विश्व में अनेक टी.वी. चैनल हिन्दी में अपने कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं। भारतीय फिल्में, गाने और यहाँ के फिल्मी कलाकार विदेशों खूब पसन्द किए जाते है। हिन्दी साहित्य ने भी हिन्दी को विदेशों में प्रतिष्ठा दिलाई है। हिन्दी साहित्य के अनेक साहित्यकारों की रचनाओं को विदेशों में बड़े आदर से पढ़ा जाता है।

हिन्दी भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा है। हिन्दी ही वह भाषा है जो जैसी लिखी जाती वैसी ही बोली जाती है। संसार की अन्य कई ऐसी भाषाएँ है जिसके अनेक अक्षर लिखित एवं उच्चारित रूप से अलग–अलग होते हैं। हिन्दी संसार की सबसे सरल भाषा है। हिन्दी इतनी सरल भाषा है कि कोई भी अहिन्दी भाषी व्यक्ति इसे आसानी से सीख सकता है। हिन्दी सांस्कारिक भाषा है जिसका संस्कार हजारों वर्षों से हो रहा है। अपने मृदु स्वभाव के कारण यह भारत में ही नहीं बल्कि भारत बाहर अनेक देशों में बोली और समझी जाने लगी है। इसीलिए इसे भारत के संविधान में राजभाषा के पद से सुशोभित किया गया है। वास्तव में भारत को राजनीतिक, भौगोलिक और आर्थिक दृष्टि से एकसूत्र में बांधने वाली हिन्दी ने समूचे भारत में अपना राष्ट्रीय गौरव प्राप्त कर लिया है। हिन्दी ने विश्व के लगभग सभी देशों में अपनी पताका फहराई है।

वैश्वीकरण के युग में हिन्दी विश्व में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं चीनी, अंग्रेजी में हिन्दी भी एक है। ग्लोबलाइजेशन ने सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार में परिवर्तित कर दिया है, जिससे लोग एक–दूसरे देशों में रोजगार के अवसरों की तलाश में जा रहे है। वर्तमान युग में वैश्वीकरण व्यापार में बदलाव लाने की आवश्यकता है जिससे लोग दूसरे देशों में जाकर काम करने में सक्षम हो सके।

हिन्दी भाषा के स्वरूप में भारत ही नहीं पूरा विश्व झलकता है। वैश्वीकरण एक जरूरी आर्थिक प्रक्रिया है, जिसके बगैर इक्कीसवीं शती में मानव कल्याण संभव नही है। वैश्वीकरण के लिए अनेक पर्यायवाची शब्द है जैसे भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण, उदारीकरण, बाजारीकरण आदि।

वैश्वीकरण की परिभाषाएँः

श्रवण कुमार सिंह ''वैश्वीकरण का अर्थ बाजार पेठ की एक निर्माण करना और उस बाजार पेठ में विश्व साधन सामग्री का सुलभ संक्रमण करना हो।''[1]

डॉ. माधव सोनटक्के : ''वैश्वीकरण अर्थात् सम्पूर्ण विश्व में स्थित मनुष्य जाति का अपने क्षेत्र, जाति, धर्म, संस्कृति तथा राष्ट्र के सीमित दायरे से निकलकर विश्वमानक के रूप में विस्तार''[2]। वैश्वीकरण के नाम से एक ऐसे युग की शुरूआत हुई है जो अचंभित करने वाली है। वैश्वीकरण का प्रभाव साहित्य संस्कृति, कला और भाषा पर व्यापक स्तर पर पड़ रहा है। वैश्वीकरण के कारण सम्पूर्ण संसार में परिवर्तन हुआ है। वैश्वीकरण का आरम्भ 20वीं शती के उतरार्ध में हुआ। यदि गहनता से सर्वेक्षण किया जाए तो हम पाएंगें कि सैंकडों देशों में भारतीय प्रवासी निवास करते हैं। जिस भी देश में भारतीय लोग निवास करते हैं वहाँ हिन्दी किसी न किसी रूप में प्रयोग में अवश्य लाई जाती है। 'विश्व क्षितिज पर हिन्दी' नामक लेख में डॉ. जयन्ती प्रसाद

नौटियाल मानते हैं कि हिन्दी विश्व के लगभग 93 देशों में स्थान बना चुकी है। भारत के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है, इसके अलावा विश्व के 110 विश्वविद्यालयों व संस्थानों में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन होता है। विश्व के देश जहाँ हिन्दी किसी न किसी रूप में विद्यमान है वे इस प्रकार है अर्जेंटाइना, पाकिस्तान, भूटान, नेपाल, पेरू, बांग्लादेश, बहरीन, म्यांमार, फीजी, कोस्टारिका, ग्वाटेमाला गणतंत्र, गयाना, कुवैत, मॉरीशस, मलेशिया, इन्डोनेशिया, ओमान कतर, साऊदी अरब, अमीरात, दक्षिण यमन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया आदि। विश्व में कुछ ऐसे भी देश है जहाँ हिन्दी के महत्व को समझा जाता है और वहाँ हिन्दी भाषा की शिक्षा दी जाती है, इनमें 'रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन तुर्की, स्पेन फ्रांस, इटली, तंजानिया, स्वीडन, स्पेन, रोमानिया, पोलैंड फिलीपींस नार्वे, केन्या, साइबेरिया, चीन, कनाडा, मैक्सिको, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया बहरीन बेल्जियम, डेनमार्क, जर्मनी, आस्ट्रिया, फिनलैंड चेकोस्लोवाकिया, बल्गारिया, हालैंड, जापान है। आज हिन्दी की स्थिति विदेशों में सम्माननीय है और यह निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। विदेशों में भारतीय मूल के लोगों की संख्या करोड़ों में है, जिस कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का एक बड़ा व्यावसायिक बाजार बनने के साथ ही हिन्दी के विस्तार की संभावनाओं का द्वार खुला हुआ दिखाई पड़ता है। इतना ही नहीं कई देशों में तो सत्ता की बागडोर भारतीय मूल के लोगों में आने के कारण हिन्दी का सम्मान और अधिक बढ़ गया है। विश्व हिन्दी सम्मेलनों के कारण वैश्विक स्तर पर हिन्दी की पत्रकारिता को भी व्यापक बल मिला है। विश्व के अनेक देशों के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्ध अच्छे होने के कारण हिन्दी के विकास की संभावना भी बढ़ी है। वर्तमान युग कम्पयूटर का युग है जैसे–जैसे कम्प्यूटर की मांग बढ़ेगी वैसी ही विज्ञान सम्मत व्याकरण वाली भाषा हिन्दी की मांग भी बढ़ेगी।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति, उन्नति और शक्ति विज्ञान पर निर्भर करती है। विज्ञान के कारण मानव जीवन में खुशहाली आती है। विज्ञान के लाभ जन–जन तक पहुंचने आवश्यक है और यह राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से ही संभव है। क्योंकि हिन्दी भारत के लगभग सभी राज्यों में बोली और समझी जाती है हिन्दी भाषी राज्यों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की विज्ञान की पाठ्य पुस्तकें हिन्दी भाषा में उपलब्ध है। आज राष्ट्रीय स्तर की बड़ी–बड़ी प्रतियोगी परीक्षाएँ अब हिन्दी माध्यम से ली जा रही है। पहले आई.ए.एस., यू.पी.एस. जैसी उच्चकोटि की परीक्षाओं के लिए अंग्रेजी की पुस्तकों पर निर्भर रहना पड़ता था, परन्तु अब ये पुस्तकें हिन्दी भाषा में भी उपलब्ध है जिन्हें पढ़कर आज अनेक विद्यार्थी उच्च पदों पर आसीन हो रहे हैं।

वैश्वीकरण के आयामों को इंगित करते हुए 'कथा में गाँव' पुस्तक सम्पादक सुभाषचन्द्र कुशवाहा का कहना है कि – 'देश और वैश्विक स्तर पर हुए परिवर्तन बता रहे हैं कि 'सब कुछ बदल गया है। डंकल, पेटेंट, मुक्त व्यापार, केबल संस्कृति, इन्टरनेट, ईमेल, चैटिंग, एस.एम.एस, डिजिटल कैमरे और अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियाँ भारतीय बाजार को केन्द्र में रखते हुए, हिन्दी को हाथों–हाथ अपना रही है। हिन्दी में रोजगार के नये अवसर निर्मित हो रहे हैं। अंग्रेजी भाषा की हुकूमत जिस शेयर बाजार पर थी। उसमें हिन्दी ने अपना पैर जमाना प्रारम्भ कर दिया है। बैकिंग व्यवस्था पर हिन्दी छाई हुई है।

अर्थ व्यापार, विश्व बाजार, बैकिंग व्यवस्था और शेयर बाजार सम्बंधी पुस्तकें अब हिन्दी में भी उपलब्ध है। भारत अब विश्व का सबसे बड़ा बाजार है जिस पर सभी देश अपनी दृष्टि लगाए हुए हैं। अब तक हिन्दी को बाजार की ताकत के रूप में जाना गया है, पर वह अब आर्थिक स्वालम्बन का आधार भी बन रही है। भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, बाजारीकरण के कारण हिन्दी को व्यापक क्षेत्र मिला है। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार तन्त्र के अनुसार मल्टिनेशनल कम्पनियों ने अपने उत्पादनों को जनता तक पहुँचाने के लिए विज्ञापन प्रबोधन के सहारे हिन्दी का प्रयोग बड़ी मात्रा में शुरू किया है।'[3]

मनुष्य को अपने विचारों को आदान–प्रदान करने की शक्ति ईश्वर से प्राप्त हुई है। मनुष्य को यह कभी स्वीकार नहीं होता कि सारा विश्व ही गूंगा बहरा होता। अगर ऐसा होता तो विश्व का कोई भी देश तरक्की नहीं कर पाता। आज वैज्ञानिक तरक्की और प्रगति के कारण ही संचार के क्षेत्र में, ई–मेल, इन्टरनेट, फेसबुक, ट्विटर, वेबसाईट, ब्लॉग, व्हाटसअप आदि का विकास हुआ है। सूचना और प्रौद्योगिकी के विकास के कारण ही वैश्वीकरण के क्षेत्र में काफी तेजी आई है। जिसका प्रभाव हिन्दी के विकास पर भी पड़ा है और इन्हीं माध्यमों के आधार पर ही हम विश्व के किसी भी देश से सम्पर्क स्थापित कर सकते है और अपने विचारों को तुरन्त पूरे विश्व में प्रसारित कर सकते हैं। वैश्वीकरण की दूसरी सबसे बड़ी देन है बाजारवाद। वैश्वीकरण बाजारवाद से जुड़ा हुआ है। जिनमें अपना माल खपाकर अधिक से अधिक अर्थोपार्जन करना तथा बाहर के उत्पादन सस्ते दामों के उपलब्धि के कारण भारत आकर्षित होता है। इसी कारण से मॉल संस्कृत का तेजी से विकास हुआ है जहाँ एक ही छत के नीचे सारा सामान मिल जाता है। मॉल संस्कृति पूरे विश्व के लिए आकर्षण का केन्द्र है। इसी संस्कृति ने विश्व में हिन्दी को बढ़ावा दिया है। उपभोक्ता को आकर्षित करने के लिए सभी को हिन्दी भाषा में विज्ञापन करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। जैसे कोका–कोला, लैकमे, डोमिनोज, डयू, क्लोजअप, पतंजलि के विज्ञापन, फ्रीज, वाशिंग मशीन, इलैक्ट्रॉनिक सामान, गाडियाँ, यहाँ तक की शराब आदि की बिक्री के लिए कम्पनियाँ हिन्दी विज्ञापनों का सहारा ले रही हैं।''[4]

हिन्दी फिल्म और टी.वी. चैनलों ने भी हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिन्दी भाषा को विश्व में प्रतिष्ठित करने का श्रेय बहुत हद तक इन्हीं माध्यमों को जाता है। टेलीविजन के हिन्दी चैनल आज अनेक देशों में देखे जाते है। हिन्दी फिल्मों की भी विदेशों में बहुत लोकप्रियता रहती है। अंग्रेजी को 'ग्लोबल' भाषा बताने वाले लोग आज मानसिक गुलामी के वातावरण में सांस ले रहे है। वे आज भी हीन भावना से ग्रस्त है। हमें अपनी भाषा के प्रति वही सम्मान रखना चाहिए जो हम अपने राष्ट्रीय ध्वज के प्रति रखते हैं। हमारे हिन्दी साहित्यकारों एवं पत्रकारों को हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए अपनी महत्ती भूमिका अदा करनी होगी। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ने हिन्दी को ग्लोबल भाषा बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

आधुनिक युग में जिसके पास नई–नई सूचनाओं का जाल है वही आज शक्तिशाली है और जिसके पास सूचनाओं का अभाव है वही पिछड़ा हुआ और कमजोर है। सूचना ज्ञान का ही एक भाग है। हम देश–विदेश, गांव, नगर, मोहल्ले की सारी सूचनाओं तथा समाचारों की जानकारी चाहते है। इन सूचनाओं की जानकारी हमारे पास संचार माध्यमों रेडियो, टेलीविजन, समाचार–पत्र आदि से प्राप्त होती है जो पूर्णतः विश्वसनीय माने जाते हैं। सूचना पाना हमारा मौलिक अधिकार है। हमें सूचना का उपयोग करना भी आना चाहिए।'[5]

टी.वी., रेडियों, इन्टरनेट, समाचार–पत्र आदि संचार माध्यम भी हिन्दी भाषा को अधिक बढ़ावा दे रहे है। टी.वी. के अधिकांश चैनल हिन्दी भाषा का ही उपयोग कर रहे है, क्योंकि वे अपने अधिक से अधिक कार्यक्रम उस जनता तक पहुंचना चाहते है जो भारत के गांवों में रहती है और जहाँ पर हिन्दी भाषा व्यवहार में लाई जाती है।'[6]

विश्व में हिन्दी फिल्म व गानों ने हिन्दी को इतना लोकप्रिय बनाया है कि हिन्दी पढ़ने वाले अडसठ देशों के छात्रों ने इसकी पुष्टि की है कि हिन्दी फिल्मों तथा हिन्दी गानों को सुनकर उन्हें हिन्दी सीखने में मदद मिली। युरोप एवं एशिया में कई चैनलों के हिन्दी कार्यक्रम को लोग बड़े ही चाव से देखते है और सुनते भी है जैसे मेरा जूता है जापानी, तुझे देखा तो ये जाना सनम, एक बार आजा आजा, आवारा हूँ गाने आदि इसी तरह भारतीय फिल्में भी इन देशों में बहुत देखी जाती है जैसे देवदास, दिलवाले दुल्हनियां ले जाएंगे, रोबोट, शोले, लगान, थ्री इडियट, हम आपके है कौन, खिलाड़ी, दिलवाले आदि विशेष रूप से लोकप्रिय हिन्दी फिल्में हैं।

हिन्दी को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने में जो भूमिका हिन्दी फिल्मों तथा टीवी ने निभाई थी उसी प्रकार से हिन्दी न्यूज चैनल और विज्ञापन ने भी हिन्दी भाषा को विश्व के हर कोने में पहुंचाने का कार्य बड़ी शिदत से किया है। विज्ञापनों की सरल–सुबोध मुहावरेदार हिन्दी लोगों में खूब लोकप्रिय हुई है। विश्व पत्रकारिता में भी हिन्दी भाषा अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वर्तमान समय में विदेशों में हिन्दी की ढेर सारी पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। विदेशों में भारतीय संस्कृति एवं जनमानस के प्रति श्रद्धा के कारण भारतीयता को गहरे तक समझने की प्रबल इच्छा ने विदेशियों को हिन्दी साहित्य को पढ़ने और अनुवाद के लिए प्रेरित किया है। इसीलिए हिन्दी की अनेक कृतियाँ विदेशी भाषाओं में अनुवादित हुई है। प्रेमचन्द्र कृत गोदान उपन्यास तो विश्व की सभी भाषाओं में अनुदित हो चुका है। आज हिन्दी ग्लोबल भाषा बन चुकी है जो विदेशों में बसे हिन्दुस्तानियों के ब्लागों में दिखाई देती है।'[7]

भारतीय मूल के लोग कई वर्षों पहले मॉरीशस, फीजी, टोबैगो एवं त्रिनिदाद, गुयाना, सुरीनाम, केन्या, दक्षिण अफ्रीका, कनाड़ा, यू.एस.ए. आदि देशों में चले गए और वहीं पर बस गए। ये लोग कई सौ वर्ष पूर्व भारतीय खेतीहर मजदूर के रूप में गए और अपनी अस्मिता बनाए रखने के लिए उन्होंने हिन्दी भाषा के निरन्तर प्रयोग को जीवित रखा। वे बिहार व उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रों से आए थे, जिनकी मातृभाषा भोजपूरी थी। इसीलिए मॉरीशस में भोजपूरी हिन्दी का प्रयोग निरन्तर हो रहा है और इसके साथ ही वहाँ मानक हिन्दी का भी विकास हुआ है। लोगों ने वहाँ अपने धर्म, तीज त्यौहारों व रीति–रिवाजों को भी जिन्दा रखा हुआ है। प्रारम्भ में उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ाने की व्यवस्था स्वयं की। वर्तमान में वहाँ महात्मा गाँधी इंस्टीट्यूट में स्नातकोत्तर तक हिन्दी की पढाई होती है।

मॉरीशस के प्रसिद्ध लेखक अभिमन्यू अनन्त ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में काफी सराहनीय कार्य किया है – 'मॉरीशस की हिन्दी अपनी माटी की सौंदी खुशबू की गंध को आत्मसात करके ही अपना एक निजी स्थान बना सकी है और हिन्दी के शब्द सरोवर में अपने हिस्से की चन्द बून्दे जोर पाहे है।'[8] आधुनिक काल में अभिमन्यू अनन्त ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में काफी कार्य किया है। हिन्दी साहित्य में उन्हें बड़े आदर भाव से देखा जाता है। उन्होंने 32 उपन्यास, 7 कहानी संग्रह, 5 नाटक, 4 कविता संग्रह 3 जीवनी आदि अनेक विधाओं की रचनाएं लिखी है। इनके साहित्य में मॉरीशस के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि विभिन्न सन्दर्भों का व्यापक चित्रण मिलता है। इनका प्रसिद्ध काव्य–संग्रह 'कैक्टस के दांत' में मजदूरों की समस्याओं और उनके शोषण का दयनीय चित्रण किया गया है। इनकी एक कविता का उदाहरण दृष्टव्य हैः–

'बड़ी कृतज्ञ मजदूर जाति

जो चिल्ला–चिल्ला कर कह रही
कि तुमसे उसे कुछ भी नहीं मिला
लेकिन मैं तो तुम्हारा आभारी हूँ
जानता हूँ कि मेरे फटेहाल झोली का
यह खालीपन तुम्हारी ही देन है।'[9]

विदेशों में हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप को विस्तार देने में प्रवासी साहित्यकारों ने सेतु का कार्य किया है। हाल के दिनों में 'लालपसीना' बहुचर्चित और लोकप्रिय हिन्दी रचना भी मॉरीशस ने दी है। लालपसीना में गिरमिटिया मजदूरों के कष्टमय जीवन का चित्रण करती हुई रचना है।

फीजी एक ऐसा देश है जहाँ हिन्दी का प्रयोग राजभाषा के रूप में होता है। यहाँ विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में हिन्दी पठन–पाठन की विधिमान्य व्यवस्था है। फीजी में कमला प्रसाद, श्रीमिश्र आदि ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार में व्यापक कार्य किया है। इसी प्रकार सूरीनाम में हिन्दी मातृभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। सूरीनाम में हिन्दी के प्रचार–प्रसार में राम प्रसाद, जगत प्रसाद, पल्टन पंडित, सरयू पंडित, सूर्य प्रसाद वीरे, महातम सिंह और यदुनाथ पंडित का योगदान उल्लेखनीय है। कैरेबियाई देशों में त्रिनिदाद टोबैगो में भी हिन्दी भाषियों की पर्याप्त संख्या है यहाँ के प्रमुख हिन्दी लेखक है लक्ष्मीनारायण शर्मा, हरिशंकर आदेश आदि हैं। दक्षिण अफ्रीका में हिन्दी के प्रचार–प्रसार में भवानी दयाल संन्यासी का नाम उल्लेखनीय है इन्हीं के सद्प्रयासों से डरबन, चार्ल्सटाउन और नाताल आदि क्षेत्रों में हिन्दी का विस्तार हुआ है। जापान, चीन, कोरिया, श्रीलंका, इन्डोनेशिया, न्यूजीलैंड, थाईलैंड आदि में बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण कालान्तर में हिन्दी भाषा में पठन–पाठन आरम्भ हुआ। इनके अतिरिक्त नेपाल में भी हिन्दी भाषा का अत्याधिक प्रचार–प्रसार हुआ है। नेपाल में सौ से भी अधिक साहित्यकार हुए है जिन्होंने नेपाली के साथ–साथ हिन्दी में भी रचनाएँ लिखी है।'[10]

निष्कर्षः

संसार के अनेक देशों में करोड़ों भारतीय लोग रहते है, जो अपनी संस्कृति, धर्म आदि की अस्मिता की रक्षा के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं। विश्व में अनेक देशों के लोगों में हिन्दी भाषा सीखने की जिज्ञासा निरन्तर बढ़ रही है। संसार भर में93 से अधिक देशों में हिन्दी भाषा पाठ्यक्रम में शामिल है। इनमें कुछ देशों में हिन्दी भाषा में समाचार–पत्र प्रकाशित होते हैं और कई देशों में तो टी.वी. चैनलों पर हिन्दी भाषा में कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं। वास्तव में हिन्दी भाषा ने सम्पूर्ण विश्व में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली है। यही कारण है कि हिन्दी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ में मानित अन्य छह भाषाओं के साथ सम्मिलित किए जाने के निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं।

संदर्भ सूचीः

1. डॉ. माधव सोनटक्के डॉ. अम्बादास देशमुख, वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भाषा और साहित्य, पृ. 39
2. डॉ. माधव सोनटक्के, हिन्दी के अद्यतन अनुप्रयोग, पृ. 60
3. सुभाषचन्द्र कुशवाहा, कथा में गाँव, पृ. 15–16
4. कंवलजीत सिंह, वैश्वीकरण, पृ. 5
5. डॉ. हरिमोहन, जनसंचार माध्यम और हिन्दी, पृ. 87
6. डॉ. अशोक तिवारी, हिन्दी भाषा और उसका विकास, पृ. 63
7. चन्द्रकुमार, जनसंचार माध्यमों में हिन्दी, पृ. 92
8. अभिमन्यू अनन्त, एक बातचीत : कमल किशोर गोयनका, पृ. 16
9. आजकल, मासिक पत्रिका, अगस्त 2018, पृ. 13
10. डॉ. शशि प्रभा श्रीवास्तव (सं.) डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त, हिन्दी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश भाग–3

ISBN: 978-81-954645-0-0